

चलिभासवापु माता ॥ १८५

नम्य निरयं मेवासासे सोम
१९३० श्रीमसेवा सरस्वती विष्णुपं

जात्रि पु हि ग का के वि जा जे ता ला वि आ पर स
वि या मा कह ना नखन मा वि या हु ॥ अय मा सर स
वि या जि ता भि ग ॥ ॥ ह र पा ल्या ले ति ति तो ने य पा जिल
मि मा म ननु जि ता सा सर नज मि मा म ननु जि ता सा सर नज

ASHA ARCHIVES 3383

का निमि सा धनं अतः जि दे

प्रभु दागि मां वरु जि दे

या ती व धे ध का नि सा न जि दे

नी जि दा सा जि दे नाने महाला

स्वस्ति श्री स वो प्र सा नो ग प त्या दे स व र व र ए न पी व र

नो आ त सा म ध श्री ग गे सा य न मा श्री सा र दा र

नमो ॥ ॥ सम लो लो क र्मा मा ल र व र जी मि म

जा नि प्र हि ग का क वि ना जि ता व व आ प र व

वि या मा क र ना न व व मा वि या ह ॥ अ य मा सर व

वि या नि ना म र ग ॥ ह र पा ल्या त ति ति तो न य पा जि ल

नी मा म न रु जि ना सा र न न म र ति श्री सा र व र

१ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वती नमः ॥ ॥ नत्वा
शुभे रेखा नावीन्द श्री मास नांद ईती प्र सिध ॥ ता
भा (स्वती) सिध हीना ॥ माहः साकेवी हीने रासी
पक्ष ऐवै १०२१ अथा प्रवक्षे मिहिरो पदे साज्ञ
स्तु यो निघ्नत नमन मा नान् ॥ ना के नवा दिनु
हलान् ३१७ पुन कति रभवत्य धगणा मुहन्त

॥ विद्या नमो लोचन वेद हित ४२०० सा ॥ ला धवी
राउ क पित नयवा ॥ ला त्रिदु एता य ए अत्य
दि ग १००७ अताना गित युक्तो ३४९ नन नै ८००
वि भक्त ॥ लघ्न नग ७ निधित मग दियुक्त सुर्व्या
स्व ही श्री सर्वो य मा जो

१ व प ल धु ति तो म च्य वि धू धू व स्या त ॥ इति
व द्र धू वा ॥ ॥ जा त म च्य ध्या न ग र ॥ ॥ ॥
त्तः मि न द ॥ ३ ले षो ग ग र ॥ ग द व नि धू ॥ वि
नि न्द ए मा इ १ प ल व ए म इ ० ह ॥ ॥ ॥ सो व द द्या त्प न ए
ग व न्द १ ६ इ ती पा त धू वा ॥ ॥ ॥ दे सा त रं दि ग र ॥ ॥ ॥

त्यु सा च्य मि ती ल्हे र ल्यां ट स मो धू व ल्या त् ॥ ॥
अ व ती दे सा धू त यो न ए ॥ ॥ ॥ स ग र ॥ ॥ ॥ वा र ॥ ॥ ॥
स मा जि ता नि धू ॥ ॥ ॥ हि रा धि व ॥ ॥ ॥ स ग र ॥ ॥ ॥ नि र ॥ ॥ ॥ द ॥ ॥
कु र्या द्या धा कु र्वा दे ४ १ फ नि ल स ग र ॥ ॥ ॥ ॥
दे स जा या वी धू व ल्या त् ॥ ॥ ॥ ॥ वा त द श्वा र द्या त र ॥ ॥

बलि ॥ ॥ अथोर्वराने द्योवि नासयुक् ॥ व
 प्रावशुसेया एविनासयाथा ॥ रामुक्कयु
 निम्पसौरीचय्या युगासावनमासवने ॥ ॥ श्री
 दपृथक् विनववु ॥ त्वलिक्रीसर्गपमाज्ञोप

30

नमो
रत्नेश्वर
नारायण

ॐ नमो श्री गणेशाय नमो ॥ श्री सरस्वति नमो ॥
श्री सरस्वत्यै नमो ॥ ४ ॥ श्री गणेशाय नमो
श्री विष्णु लोकाय नमो ॥ श्री श्री मत्स्य नाय नमो
॥ मा साराजं श्री मंदरा सर्वकाली देवी दुवजा देवी
आविष्कृतं देवी शक्तिं कुरु ॥ ५ ॥ पल्लवे दि
५ ॥ ५ ॥ युक्तः ॥ तत्त्व विदुः ॥ दोषा न विदुः ॥
पर्युक्तानि लक्षानि मेव गीतसर्दसमास्य

नाम ॥ अदेवे सगगगुणे देया षं च चंद्रेषु लोचना
र्यकां नु ॥ ६ ॥ त्वत्ती कुरुणे प्राप्ता स मुनिनि
हिरोदित ॥ ७ ॥ सा त्वा ह विदका च न ल
५ ॥ ५ ॥ सितरा स ज्य ॥ ८ ॥ साहिजा ॥ स मा
हम दाद सहा विचकै ॥ ९ ॥ से के न वा का गगता
गति घु म क्तान रा मा सार स तिम ज ऊ र्व

ॐ नम श्री विष्णु लक्ष्मी वृक्षाय वे कुं धा लो क श्री विष्णु
क श्री विष्णु कवच धाम्ना

ॐ नमो श्री विष्णु लक्ष्मी वृक्षाय वे कुं धा लो क श्री विष्णु
कवच धाम्ना सी नै सु धा त्प लं मन ही दा श्या यि व ध्या
मि याम हु अ का ल पु गु ति मे य ना स रु र्वा ॥ ॥ ॥ ॥

श्री १

श्री गणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवा

य

॥ वृक्षाय च ॥

॥ विष्णु वृक्षाय क दिव्य

सर्व दुःख निवारन ॥ इत्यनेन जमहा विष्णु सर्व तनुनि

वृक्षे नं ॥ १ ॥ ॥ अर्थ ॥ वृक्षान् श्री गणेशाय कला

विष्णु या स्त्रा च कति दिव्य द्रुया व चो ५ : ५ को ५

॥२॥
द्वयामयनिवारनञ्जुयिवः तव धाउ. तेजः महावि
रः दक्षसञ्जुनिवारनयाक ॥ ॥ त्रिपुरंदरं ह्य
मानस्तु वसना ईश्वरकृत ॥ तदहं दीप्य नक्षामी
श्रीन्मारक्षासाध्या भवेत् ॥ २ ॥ ॥ अस्यार्थः ॥
स्वगुजुगने ह तपो लब्ध्वा देवं हृत्वा यो लब्ध

॥३॥
हृत्वा लब्ध्वा त्मा हृत्वा यो लब्ध ॥ ॥ पादोरक्षं तु गो
विन्दं जंघाभ्यां त्रिविक्रमां उरुभ्यां केशवोरक्षक
त्वा चैव जगद्वर्तन ॥ ३ ॥ ॥ अस्यार्थः ॥ ॥ तुतिपात्रि
सगोविन्दं नरक्षाया यमाल जलसत्रीविक्रमनरक्षा
या यमालः उरुभ्यां केशव नरक्षाया यमालः ॥

लसजनादननरक्षायायमाल ॥ ॥ नामोस्तु त्र्यम्बु
नोरक्षोऽहस्तुवा मनस्तथा उदरे पद्मनाभं च हरि
दृष्टे चरक्षतु ॥४॥ ॥ तस्यार्थ ॥ ॥ तेषु स त्र्यम्बु
तनरक्षायायमाल मुच्यते रक्षवा मनरक्षाया
यमालः पेनयासय ह्यना मनरक्षायायमाल

हरिजकुलिसरक्षायायमाल ४ वा मया स्व जतो
विष्णुदक्षनेर्महुरुदनः वा दूभ्यां नास्तुदे वष
हृदयश्च जनादन ॥५॥ ॥ तस्यार्थ ॥ ॥ त्वयला
होतिसा विष्णु नरक्षायायमाल वाहनैषे स नकु
देवनरक्षायायमाल नुगल सजनादनरक्षाया

यामात ५ कैथ रक्षारुवाराहकृष्णमृदु
रादलेमाधनोकरां योरक्षरुषिकेसधनामी
के ॥ ६ ॥ ॥ तस्यार्थ ॥ ॥ कैथसवयुह नगर रक्षा
याईव छनस श्रीरुद्र नर रक्षायाईव क्रस पो
न स मा च व न रक्षायाईव क्रस पो न स इवि

के स व र ग र क्षा या ई व ७ नेत्रो नाराय
नो र क्षा रु लाने ग ल उ च न ॥ क पो लो के व
को र क्ष वै न ने य च रु क्षा रु ॥ ८ ॥ न स्याथ
॥ मि र वा स नाराय न र ग र क्षा या ई व छो स
न स ग ल उ च न र क्षा या ई व क या ल स के

231

सुनहि ॥ श्रीवत्सल ॥ सात भित्त
आ लवदि नगदिना नको लागहि
आसा दननिगि

कुलवत्सर

五

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

卷之五

五

卷之四

A small, dark, vertical, textured object, possibly a piece of wood or a small sculpture, standing upright. It has a rough, uneven surface and a slightly irregular shape, with some lighter-colored material visible at the base.

॥ ८ ॥

ॐ नमः श्री भिमस्य नाय नमो ॥ महा रजं भिमं
सदा शर्व कालैः दको दुस्वभारं लया विद्धत्वा
॥ कलैर्वै कबालः ननानं निवारः समस्त सु
रैः दीउ लिं विवा लै ॥ १ ॥ अद्यो त्या सरि लै
अवतार कालैः महा देव ठ्यैः ॐ नमः भिमस्य न

॥ ९ ॥

॥ अद्या लै हता लै कृता देत्य रुथा लै वरा प्यं गदानं
सदा सन्नु दालै ॥ २ ॥ सूनं हसुनं असुरं हता लै वथ्या
ता पुसा लै आगिनं उं कालै ॥ वालिनं वसिष्ठु पति
॥ छमेरा छता लिं चीना की चक्या लै ॥ ३ ॥ न
सा सीधे पाला लै निवेद्यै कपा लमहा दुख

५१०॥

इजो धन्या धान्या ली ॥ दको दस्य इजो सदा स
हुहुध अहंकार माग वं हीरार याते ॥ ४॥ मेला
कुवरी धां ली माया मस्या तं मागुद्ध या डाव मे
समा तं ॥ अकेल मह हाया की सी या वल्यु का
न सदा सा धु सिले महु हुं गु माने ॥ ५॥ हुहु

१०

॥१११॥

असमान सुमुद्र समाने वली वामि पुत्री वदा
हुयि दाने ॥ कलिस्कृति पुत्री कला हर्ष माने
वली हुयि दाने विला भाग्य दाने ॥ ६॥ सको
ज्या सिधाय की वदा यी विला दी मनुषी मतेन
दिगुली हुमाहि वन याम क लोक मन मय

११

या

५९२

कचिंत सदा कस्य नमस्कारे नैव ॥७॥
सदा साध्यं कसिद्धिर्गच्छेत्तु च कसिद्धिर्गच्छेत्तु च कसिद्धिर्गच्छेत्तु च
ईन्द्र ॥ दिदेव मनुष्य ॥ अनेक कस्तोत्र ध्यानं म
न्या भावकर्म वीलाज्या सिद्धि मर्क ध्यतमे
क्षधर्म ॥८॥ वृकोदत्तं नृप सान्यासात्ति

१२

॥९३॥

ले मसमस्त भलो सा सदा जिद्धि नैव तय ॥
कृष्ण मूर्ति च ज्योति सुखो दमा यो सदा यम
सिद्धि मर्क सुदुर्षु क्षमा यी ॥९॥ जिद्धि ग वि
वि जय माता दे तयदा या वस्या ता त्रिभुवन
जित कला वैरि विद्धि मया ता वन जस जस

१३

॥१४॥

माता भिमराजा विज्याता भिऊ जनकरका
ता मोरा सपनिदाता ॥१०॥ इति श्री भिमभु
वजी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
श्री गणेशाय नमो ॥ ॥ श्री सारदादेवि
नमो ॥ ॥ मोक्षाति विसरल पाद वंयज

१४

॥१५॥

॥ माति ॥ मोह सदा दुखित तल मली ॥ तव नै
मि सरस्वति पाद जुगी ॥ तु वदीह ममा तुहे
सरस्वति ॥ नमस्ते तव वने नैवे ॥ नमस्ते मो
ह वजनि ॥ नमस्ते मोक्षदाती रसरन पाद
वजामि है ॥ श्री ईश्वरदादेवि तो नैवे ॥

१५

ॐ नमः ॥ श्री गुरुदेवे नमः ॥ ॥ स्मरं हं विद
सनाथ दयालो भालो च नरु विपुलारे ॥

॥१६॥

श्री गुरुदेवे नमः ॥ श्री गुरुदेवे नमः ॥

१६

श्री गुरुदेवे नमः ॥ सदसा ददादि नसे पादुकायी ॥ अनेक प्रकार
नमस्कार पाठ ॥ दक्ष साववी आ विवदि न नाने जिता छि कया

न विवु वुधी जान ॥ छि गुलि महात्म मे ॥ अने कै कविर मकुष
रवाने ॥ सुजिदानी देवी : छि के भगति यातं ॥ मुनि व्याधि जो
गोद कया छि माता ॥ अति भीरु मुनि तु ईश्वर गिलोथे ॥ छि व्या
मा पुभा जा मुनि स्या ससि धी ॥ मुसुन नहे ला प्रभा चीड
निधे ने पावु जलं सुज माते जगे ली ॥ कला च दया ला सिले स्वा न

॥१७॥

१७

॥१४॥

होथैमिरादिसमानमहुवानलोथे ॥ गलभोतिगामालनवा
नलातंसफुभक्षमालाजोसेवेनधातंसदाहसमाह्रदिपालि
सदिलंतुयिवस्त्रलुयातिसानेकतिलं ॥ दकोलोकमाकेह्मु
तुसहिदिलं अथेवागवानिध्वकं नामसीलदक्किंदरिअ
यसाह्मिजुयासंझुथे नित्यगीतायमाताहतासेमिदं गदि
वाजाधोमिसंनधातं हनं नारदं स्वस्वरगितहलं मुनिनारदादि

१४

॥१५॥

दक्कोत्रगानं ह्पायुनधुतिवित्तानेकसात्रगुलितोनुवाताईली
तोहिनाममफुहिवरवानंजितापापमाली ॥ सिवाभोरतिसा
रदावागवानिजगतारनिविधुं कक्तिभवानीथथेत्येवयासेधि
केभक्तियायि ॥ धमभारपाक्दक्पुनलाईनेगुलिदधुक्ति
मेलाऊधोमितासकुनेयोषह्मधुतिधिअसुमिधयंधुलिवि
पुलदिमिसुरदंदवोऊजितासिधिविआदीपालीसकोऊ ॥

१५

॥२२॥

भावनमतेजेइस्वरितेजोस्वेवीयद्योन-शुगुलिलोकसमथा
नो॥ ॥इति श्रीसारदादेवि तेत्रसमाप्त॥ ॥ ॥ ॥
श्री सा र दा दे वी नमो॥ ॥ सरस्वति नखर्वदा
लुद्धिदिनंखर्वजिना॥ ॥ चोपो लवर्गिरा जहंष
वाहनंदिनंयाता मनकजो सवा लुचंद्रखानथेस्यता
लुतादिगुतिव्या लया प्रला वं नं पूर्ण चन्द्रनंविना

२२

॥२३॥

॥ सरस्वति नखर्वदा लुद्धिदिनंखर्वजिना॥ १॥ दिगलि
नामचिर्नानपापनंलुक्कविना समेतदेवलोकरा
मनकनंलुनिचिनावेगुलिवेदयामनंभजा नुनंलु
निजाता॥ सरस्वति नखर्वदा॥ २॥ समस्त लोकशालु
लुसजासनीदिनयात अथोनवागकादिनिनि

२३

॥२४

॥२४॥

२४

॥२५॥

२५